K15P 0247

Reg. No. : .....

Name : .....

GOVT. BRENNEN COLLEGE CENTRAL LIBRARY THALASSERY

I Semester M.A. Degree (Reg./Sup./Imp.) Examination, November 2015
(2014 Admn. Onwards)
HINDI LANGUAGE AND LITERATURE
HIN1C01 : Medieval Hindi Poetry

Time : 3 Hours Max. Marks : 80

I. किन्हीं **चार** अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए । **(4×5=20)**

1) मन अतिभयो हुलास, बिगसि जनु कोक-किरन-रवि ।
अरुन अधर तिथ स धर बिंबफल जानि कीर छबि ।।
इस चाहत चष चक्रित, उह जु तक्रिय झरप्पि झर ।
चंचु चहुट्टिय लोभ, लियो तब गहित अप्प कर ।।
हरषद अनंद मन मँह हुलस, लै जु महल भीतर गई ।
पंजर अनूप नग जटित, सो तिहि मँह रष्षउ भई ।।

2) वीर जीते सर मैन के, ऐसे जीते मैन ।
हरिनी के नैनानु तैं हरि नीके ए नैन ।।
खेलन सिखए अलि भलै, चतुर अहेरी मार
कानन-चारी नैन-मृग, नागर नरनु शिकार ।।

3) पूरनता इन नयन न पूरी
तु जो कहत स्त्रवननि समुझत, ये याही दुख मरत बिसूरी ।।
हरि अंतर्थामी सब जानत, बुद्धि विचारत बचन समूरी ।
वै रस रूप रतन साजर निधि क्यों मनि पाय रखावत धूरी ।।
रहु रे कुटिल, चपल, मधु लंपट, कितव संदेस कहत कटु कूरी ।
कहँ मुनिध्यान कहाँ ब्रजयुवती । कैसे जात कुलिस करि चूरी ।।
देखु प्रगाट सरिता सागर, सर सीतल सुभग स्वाद, रूपि रूरी ।
सूर स्वाति जल बसै जिय चातक चित लागत सब झूरी ।।

P.T.O.

4) रहेउ एक दिनु अवधि अधारा । समुझत मन दुख भएउ अपारा ।
कारन कवन नाथ नहिं आएउ । जानि कुटिल किधौं मोहिं बिसराएउ ।।
अहह धन्य लछिमन बडभागी । राम पदारबिंदुअनुरागी ।
कपटी कुटिल मोहिं प्रभु चीन्हा । तातें नाथ संग नहिं लीन्हा ।।
जौं करनी समुझै प्रभु मोरी । नीहं निस्तार कलप सत कोरी
जन अवगुन प्रभु मान न काऊ । दीनबन्धु अति मृदुल सुभाऊ ।
मोरे जियँ भरोस दृढ सोई । मिलिहहिं रामु सगुन सुभ होई ।
बीते अवधि रहहि जौ प्राना । अधम कवन जग मोहि समाना ।

5) अति सूधो सनेह को मारग है जहँ नेकु सयानप बाँक नहीं ।
नहाँ साँचे चलै तजि आपनबी झझकै कपटी जे निसाँक नहीं
घन आनंद प्यारे सुजान सुनो यहाँ एक ते दूसरो आँक नहीं ।
तू कौन धौं पाटी पदे हो लला मन देहु पै देहु छटाँक नहीं

6) बै कयूँ कासी तजै मुरारी । तेरी सेवा-चोर भये बनवाटी
जोगी-जती-तपी सन्यासी । मठ देबल बीस परसै कासी
तीन बार जे नित प्रति नहावै । काया भीतरी खबीर न पावै
देवल देवल फेरि देहीं । नाव निरंजन कबहुँ न लेहीं
चरन-बिरद कासी कौ न दैहूँ । कहै कबीर भल नरकहि जैहूँ ।।

7) नागमति चितउर पथ हेरा, पिउ जो गए पुनि कीन्ह न फेरा ।
नागर काहु नारि बस परा, तेई मोर पिऊ मौसौ हरा ।
सुआ काल होई लेइगा पीऊ । पिऊ नहि जात जात वरु जीऊ ।
भएऊ नारायण बावन करा राजकरत राजा बलि छरा ।
करन पास लीन्हेऊ कैछंद । प्रिय रूप धारि झिलमिल इंदू ।
मानत भोजी गोपी चंद जोगी । लेइ अपसवा जलंधर जोगी ।

II. किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर लिखए (अधिकतम **150** शब्दों में) **(3×8=24)**

1) कबीर की भक्ति भावना
2) पद्मावत की प्रतिकात्मकता
3) तुलसी की काव्य दृष्टि
4) धनानंद के वियोग वर्णन ।
5) बिहारी की बहुइता ।

III. किन्हीं **तीन** प्रश्नों पर निबन्ध लिखिए (अधिकतम **300** शब्द) : **(3×12=36)**

1) सूफी काव्य परंपरा के महत्त्वपूर्ण कवि जायसी का परिचय देते हुए पद्मावत के काव्य सौंन्दर्य पर प्रकाश डलिए ।
2) भ्रमरगीत में चित्रित विप्रलंभ श्रृंगार का परिचय दीजिए ।
3) कबीरदास के राम का परिचय दीजिए ।
4) रामचरित मानस तुलसी की कीर्ति का अमर स्तंभ है - समर्थन कीजिए ।
5) पद्मावती का सौन्दर्य वर्णन कीजिए ।